सम्पादकीय

श्री गुरु नानकदेव जी का पावन स्मरण

श्री गुरु नानक देव जी का जन्म कार्तिक मास की पूर्णिमा को हुआ था। पूर्णिमा मास का धवल पक्ष है। श्री गुरु नानकदेव जी की धवल महिमा ने संकट ग्रस्त मध्य काल में भारत को उभारने का उपक्रम किया। श्री गुरु नानकदेव जी से ही भारत में उस गुरु परम्परा का प्रारम्भ हुआ जो कालान्तर में भारतीय दश गुरु परम्परा के नाम से प्रसिद्ध हुई। श्री नानकदेव जी ने जो भक्ति रस प्रवाहित किया उससे भारत के चारों कोने प्लावित हुए। कार्लमार्क्स ने तो गरीब की चिंता बहुत बाद में की होगी लेकिन गुरु नानक देव जी ने भाई लालो की रूखी सूखी रोटी खाकर श्रम की महत्ता को प्रतिपादित किया। इतना ही नहीं श्रम से उत्पाति वस्तु को आगे बांटने की प्रणाली भी स्थापित की। विदेशाी सत्ता से त्रस्त भारत की हर दिशा में जाकर नानकदेव जी ने लोगों की चेतना को झकझोरा। हिन्दु समाज की भीतरी चेतना को जागृत किया। लम्बे विदेशी शासन के कारण भारतीयों में निराशा का संचार भी हुआ ही होगा।

श्री नानकदेव जी ने नाम की महिमा स्थापित की। ईश्वर का नाम सभी संकटों से रक्षा करता है। परन्तु उस ईश्वर पर आस्था और विश्वास पूरा होना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति को अकर्मण्य हो जाना चाहिए। नानकदेव जी ने कहा सतयुग में तो लोग सत्य की उपासना करते थे। त्रेता में यज्ञ की परम्परा थी। द्वापर में लोग अपने इष्ट देव की पूजा करते थे। लेकिन कलयुग में ईश्वर का नाम ही सबसे बड़ा आधार है। उन्होंने कहा कि चार वेद है, अनेक स्मृतियां हैं, छ शास्त्र है। परन्तु क्या इन्हें पढ़ने मात्र से ही समस्या हल हो जाएगी? असली चीज है लिखे हुए के भीतर के सत्य को धारण करना। इतना ही नहीं बल्कि उसके उपरान्त उस पर आचरण करना। आचरण से ही न आया। वे यह प्रश्न तो शायद ईश्वर से ही पूछते हैं कि जब हिन्दुस्थान पर ईरानियों ने इतने अत्याचार किये तब तुम्हें दर्द क्यों नहीं हुआ। परन्तु उन्होंने अपनी वाणी में अन्यत्र दिया है। आचरण और कर्म की जिस महिमा का हमने ऊपर उल्लेख किया। श्री गुरुनानक देव जी का यही उत्तर है जो सत्य के मार्ग पर चलता है उसे भय नहीं होता और जिसे भय नहीं होता वह अन्याय के खिलाफ खड़ा हो सकता है। यदि देश के लोग अन्याय के खिलाफ खड़े हो जाएंगे तो भला कोई भी बाबर इस देश पर आक्रमण करके कैसे जीत सकता है। गुरु नानक देव जी का संदेश तो इससे भी आगे का है। केवल सत्य का नाम लेने से बात नहीं बनती। वह कोरा ज्ञान हो जाता है। उसको धारण करना पड़ता है। तभी कर्म का मार्ग खुलता है जो मुक्ति का रास्ता है। वह मुक्ति चाहे विदेशी हुकमरानों से या भीतरी बुराईयों से।

श्री गुरुनानक देव जी ने जो रास्ता और जो संदेश मध्य काल में दिया था। वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस काल में था। आज छिपे हुए बबार आक्रमण कर रहे हैं और देश के भीतर ही कई बाबर पैदा हो चुके हैं। यह बाहर के और भीतर के बाबर है। जो गुरु नानकदेव के भारत को पुनः खण्डित करना चाहते है। आज खुरासान तो भारत पर आक्रमण नहीं कर रहा लेकिन पाकिस्तान, बंगलादेश और अमेरिका जैसे देश भारत को तोड़ना चाहते है। आतंकवाद उनका सबसे बड़ा हथियार है और भीतर के जयचन्द तो हैं ही। परन्तु जिस भारतवर्ष की धरती का चप्पा-चप्पा श्री नानकदेव के चरणों से पावन हो चुका है, उसको इस बार के खुरासानों का खुद जवाब देना होगा। यही गुरुनानक देव जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उनका पावन स्मरण ही और उसका अनुसरण आतंकवाद को परास्त करने का एक मात्र रास्ता है। गुरु नानकदेव जी का रास्ता सत्य का रास्ता है और सत्य कभी पराजित नहीं होता।

- डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री